ॐ जय कलाधारी हरे, स्वामी जय पौणाहारी हरे,
भक्त जनों की नैय्या भव से पार करे। ॐ जय .....
बालक उमर सुहानी, नाम बालक नाथा,
अमर हुए शंकर से सुनकर अमर गाथा। ॐ जय .....
सीस पे बाल सुनहारी, गल रुद्राक्षी माला,
हाथ में झोली चिमटा, आसन मृगछाला । ॐ जय .....
सुन्दर सेली सिंगी, वैरागन सोहे,
गऊ पालक रखवाला, भगतन मन मोहे । ॐ जय .....
अंग भभूत रमाई, मूरती प्रभु रंगी,
भय भंजन दुःख नाशक, भरतरी के संगी । ॐ जय .....
रोट चढ़त रविवार को, फल फूल मिश्री मेवा,
धूप दीप कुदनूं से, आनन्द सिद्ध देवा । ॐ जय .....
भगतन हित अवतार लियो, प्रभु देख के कलु काला,
दुष्ट दमन शत्रु घन, दीनन प्रतिपाला । ॐ जय .....
बाबा बालकनाथ जी की आरती, भक्तो नित गाओ,
कहत है सेवक तेरे, सुख सम्पति पाओ। ॐ जय .....